

एलियाह - नंबर वन

पहला और आखिरी

Jeff Pippenger

2023-07-31

पुराने नियम का समापन कथन यह प्रतिज्ञा करता है कि भविष्यवक्ता एलियाह प्रभु के महान और भयानक दिन से पहले एक संदेश लेकर प्रकट होंगे।

देखो, प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ता एलियाह को भेजूंगा। और वह पिताओं का मन बच्चों की ओर, और बच्चों का मन उनके पिताओं की ओर फेर देगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप दूँ। मलाकी 4:5, 6.

बाइबल स्पष्ट करती है कि "प्रभु का महान और भयावह दिन" या वह "शाप" जिससे परमेश्वर "पृथ्वी को" दंड देता है, का प्रतीकात्मक चित्रण "सात अंतिम विपत्तियों" या "परमेश्वर के क्रोध" के रूप में भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। प्रकाशितवाक्य का पंद्रहवाँ अध्याय उस भविष्यवाणीपूर्ण परिदृश्य का परिचय देता है, जो सोलहवें अध्याय में वर्णित महान और भयावह सात अंतिम विपत्तियों के उंडेले जाने की ओर ले जाता है।

और मैंने स्वर्ग में एक और चिन्ह देखा, महान और अद्भुत: सात स्वर्गदूत जिनके पास अंतिम सात विपत्तियाँ थीं; क्योंकि उनमें परमेश्वर का क्रोध पूर्ण हो चुका है।

और मैंने देखा, मानो आग से मिला हुआ काँच का सा समुद्र; और जो उस पशु पर, और उसकी प्रतिमा पर, और उसके चिन्ह पर, और उसके नाम की संख्या पर विजय पा चुके थे, वे उस काँच के समुद्र पर खड़े थे, और उनके पास परमेश्वर की वीणाएँ थीं। और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाते हैं, यह कहते हुए, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े और अद्भुत हैं; हे पवित्रों के राजा, तेरे मार्ग धर्मी और सच्चे हैं। हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है; क्योंकि सब जातियाँ आकर तेरे सामने उपासना करेंगी; क्योंकि तेरे न्याय प्रकट हो गए हैं।

और उसके बाद मैंने देखा, और देखो, स्वर्ग में गवाही के तम्बू का मन्दिर खुला; और सात स्वर्गदूत मन्दिर से निकले, जिनके पास सात विपत्तियाँ थीं, वे शुद्ध और उजले मलमल के वस्त्र पहने हुए थे, और उनके वक्षस्थल सोने की पेटियों से कसे हुए थे। और चारों प्राणियों में से एक ने सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के क्रोध से परिपूर्ण सात सोने के कटोरे दिए, जो युगानुयुग जीवित है। और मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी सामर्थ्य से निकलने वाले धुँएँ से भर गया; और जब तक सात स्वर्गदूतों की सात विपत्तियाँ पूरी न हो गईं, तब तक कोई मनुष्य मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सका। प्रकाशितवाक्य 15:1-8.

"जब तक सात स्वर्गदूतों की सात विपत्तियाँ पूरी न हो गईं, तब तक कोई मनुष्य मंदिर में प्रवेश नहीं कर सका"—इसका कारण यह है कि पंद्रहवें अध्याय में जब मंदिर धुँएँ से भर जाता है, तब उद्धार प्राप्त करने का अवसर बंद हो जाता है। मानवजाति को पश्चाताप कर उद्धार पाने के लिए दिया गया अनुग्रह का समय तब समाप्त हो जाता है। जब वह समय आ जाता है, तो "प्रभु का महान और भयानक दिन"—जिसे यूहन्ना "सात अंतिम विपत्तियाँ" कहता है—मसीह के दूसरे आगमन से पहले उँडेल दी जाती है। मलाकी ने उस दिन को "भयानक" कहा, और यशायाह ने उसे परमेश्वर का "विचित्र कार्य" बताया।

क्योंकि प्रभु पेराल्ज़ीम पर्वत पर जैसे उठ खड़ा हुआ था, वैसे ही उठ खड़ा होगा; वह गिबियोन की तराई में जैसे क्रोधित हुआ था, वैसे ही क्रोधित होगा, ताकि वह अपना काम—अपना विचित्र काम—करे, और अपना कार्य—अपना अजीब कार्य—पूरा करे। इसलिए अब तुम ठट्ठा न करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे बंधन और दृढ़ कर दिए जाएँ; क्योंकि मैंने सेनाओं के प्रभु परमेश्वर से एक विनाश के विषय में सुना है, जो समस्त पृथ्वी पर

ठहराया गया है। यशायाह 28:21, 22.

यद्यपि परमेश्वर का "अजीब कार्य" "समूची पृथ्वी" को समेटता है, प्रेरणा स्पष्ट करती है कि विपत्तियों का उंडेला जाना एक राष्ट्र के विद्रोह से संबंधित है।

"विदेशी राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण करेंगे। यद्यपि वह अग्रणी है, फिर भी वही संकट हमारे लोगों पर संसार के सभी भागों में आएगा।" टेस्टिमोनीज़, खंड 6, 395.

"जब अमेरिका, जो धार्मिक स्वतंत्रता की भूमि है, पोप की सत्ता के साथ मिलकर विवेक पर बल-प्रयोग करेगा और मनुष्यों को झूठे सब्त का सम्मान करने के लिए बाध्य करेगा, तब विश्व के प्रत्येक देश के लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किए जाएंगे।" टेस्टिमोनीज़, खंड 6, 18.

हर राष्ट्र अपने परीक्षणकाल का प्याला भर देगा, लेकिन बहन वाइट जिन "परमेश्वर के न्याय" को "राष्ट्रीय विनाश", "परमेश्वर के विनाशकारी न्याय का समय" कहती हैं—और इसी नाम से वह उस इतिहास को भी पुकारती हैं जो संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून से आरम्भ होता है—वे सात अंतिम विपत्तियाँ नहीं हैं।

"एक समय आने वाला है जब हमारे देश में परमेश्वर की व्यवस्था को एक विशेष अर्थ में अमान्य कर दिया जाएगा। हमारे राष्ट्र के शासक विधायी अधिनियमों द्वारा रविवार का कानून लागू करेंगे, और इस प्रकार परमेश्वर की प्रजा को बड़े संकट में डाल दिया जाएगा। जब हमारा राष्ट्र, अपनी विधायी परिषदों में, ऐसे कानून बनाएगा जो मनुष्यों के विवेक को उनके धार्मिक विशेषाधिकारों के संबंध में बाँध दें, रविवार-पालन को बाध्य करें, और सातवें दिन का सब्त मानने वालों के विरुद्ध दमनकारी शक्ति का प्रयोग करें, तब व्यवहारतः हमारे देश में परमेश्वर की व्यवस्था अमान्य कर दी जाएगी; और राष्ट्रीय धर्मत्याग के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय विनाश होगा।" रिच्यू एंड हेराल्ड, 18 दिसंबर, 1888.

परमेश्वर के न्याय, जिन्हें सिस्टर व्हाइट "राष्ट्रीय विनाश" कहती हैं, राष्ट्रीय रविवार कानून से आरंभ होते हैं और परमेश्वर के "विचित्र कार्य" की शुरुआत को चिह्नित करते हैं, यद्यपि परमेश्वर का यह विचित्र कार्य अधिक विशेष रूप से अंतिम सात विपत्तियाँ हैं। परमेश्वर के दण्डात्मक न्यायों की श्रृंखला में मिस्र से मुक्ति को जोड़ने पर परमेश्वर के इस विचित्र कार्य का एक अधिक पूर्ण चित्र उभरता है। मिस्र की विपत्तियाँ संख्या में भले ही दस थीं, पर वे विभाजित थीं। पहली तीन, अंतिम सात से भिन्न थीं। इस प्रकार, मिस्र से मुक्ति उस कालखंड की पहचान कराती है, जिसका प्रतिनिधित्व पहली तीन विपत्तियाँ करती हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय विनाश से शुरू होकर मीकाएल के खड़े होने और मानव अनुग्रहकाल के समाप्त होने तक चलता है।

जो उसके लोगों को उत्पीड़ित और नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, उन पर परमेश्वर के न्याय अवश्य आएँगे। दुष्टों के प्रति उसकी दीर्घ सहनशीलता मनुष्यों को अधर्म में निर्भीक बना देती है, परन्तु उनका दण्ड, जो देर से होने के कारण और भी भयानक है, फिर भी निश्चय ही सुनिश्चित है। 'यहोवा जैसे पेराजिम पर्वत पर उठ खड़ा हुआ था, वैसे ही वह उठेगा; और जैसे वह गिबोन की तराई में क्रोधित हुआ था, वैसे ही वह क्रोधित होगा, ताकि वह अपना काम—अपना विचित्र काम—करे; और अपना कार्य—अपना विचित्र कार्य—पूरा करे।' यशायाह 28:21। हमारे दयालु परमेश्वर के लिए दण्ड देना एक विचित्र कार्य है। 'जितना मैं जीवित हूँ, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, 'मुझे दुष्ट की मृत्यु में प्रसन्नता नहीं।' यहजेकेल 33:11। प्रभु 'दयालु और अनुग्रहकारी, धीरजवन्त, और करुणा तथा सत्य से परिपूर्ण है, ... अधर्म, अपराध और पाप को क्षमा करता है।' तौभी वह 'दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।' 'यहोवा क्रोध करने में धीमा और पराक्रम में महान है, और दुष्ट को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।' निर्गमन 34:6, 7; नहूम 1:3। धर्म में भयानक बातों के द्वारा वह अपनी कुचली हुई व्यवस्था के अधिकार को प्रतिष्ठित करेगा। न्याय के निष्पादन में प्रभु की अनिच्छा से यह आंका जा सकता है कि अपराधी पर आने वाला दण्ड कितना कठोर होगा। वह जाति जिसके साथ वह लंबे समय तक सहता है, और जिसे वह तब तक नहीं मारता जब तक कि परमेश्वर के लेखे में वह अपने अधर्म का परिमाण पूरा न कर ले, अन्ततः दया से बिना मिश्रित क्रोध का प्याला पिएगी।

जब मसीह पवित्रस्थान में अपनी मध्यस्थता समाप्त कर देंगे, तब वह अमिश्रित क्रोध, जिसकी चेतावनी उन लोगों के विरुद्ध दी गई है जो पशु और उसकी प्रतिमा की उपासना करते हैं और उसका चिन्ह ग्रहण करते हैं (Revelation 14:9, 10), उंडेल दिया जाएगा। जब परमेश्वर इस्राएल को छुड़ाने ही वाले थे, तब मिस्र पर आई विपत्तियाँ स्वभाव में उन अधिक भयानक और व्यापक न्यायों के समान थीं जो परमेश्वर की प्रजा की अंतिम मुक्ति से ठीक पहले संसार पर आने वाले हैं। उन भयानक प्रकोपों का वर्णन करते हुए दर्शी कहता है: 'जिन लोगों पर पशु का चिन्ह था और जो उसकी प्रतिमा की उपासना करते थे, उन पर घिनौना और अत्यंत कष्टदायक फोड़ा पड़ा।' समुद्र 'मरे हुए मनुष्य के लहू सा हो गया; और समुद्र में हर एक जीवित प्राणी मर गया।' और 'नदियाँ और जल के सोते ... लहू बन गए।' ये दंड जितने भी भयानक हों, परमेश्वर का न्याय पूर्णतः उचित सिद्ध होता है। परमेश्वर का स्वर्गदूत घोषित करता है: 'हे प्रभु, तू धर्मी है, ... क्योंकि तू ने ऐसे न्याय किए हैं। क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लहू बहाया है, और तू ने उन्हें पीने को लहू दिया है; क्योंकि वे इसके योग्य हैं।' Revelation 16:2-6। परमेश्वर की प्रजा को मृत्यु के लिए दोषी ठहराकर, उन्होंने उनके लहू का अपराध वास्तव में उसी प्रकार अपने ऊपर ले लिया है मानो वह उनके ही हाथों से बहाया गया हो। इसी प्रकार मसीह ने अपने समय के यहूदियों को उन सब पवित्र पुरुषों के लहू के लिए दोषी ठहराया जो हाबिल के दिनों से अब तक बहाया गया था; क्योंकि उनमें वही आत्मा थी और वे भविष्यद्वक्ताओं के इन हत्यारों के समान ही वही कार्य करने का प्रयत्न कर रहे थे।

इसके बाद आने वाली विपत्ति में सूर्य को यह अधिकार दिया जाता है कि वह 'मनुष्यों को आग से झुलसा दे। और लोग बड़ी तपिश से झुलसा दिए गए।' आयतें 8, 9. नबी इस भयानक समय में पृथ्वी की दशा का इस प्रकार वर्णन करते हैं: 'भूमि विलाप करती है; ... क्योंकि खेत की फसल नाश हो गई है.... मैदान के सब पेड़ सूख गए हैं: क्योंकि मनुष्यों के पुत्रों से आनंद मुरझा गया है.' 'बीज उनके मिट्टी के ढेलों के नीचे सड़ गया है, कोठार उजाड़ पड़े हैं.... क्या ही पशु कराहते हैं! गाय-बैलों के झुंड उलझन में हैं, क्योंकि उनके पास चराई नहीं है.... जल की नदियाँ सूख गई हैं, और जंगल की चराइयों को आग ने भस्म कर दिया है.' 'उस दिन मंदिर के गीत विलाप बन जाएंगे, प्रभु यहोवा कहता है: हर स्थान पर बहुत से शव होंगे; वे उन्हें मौन में बाहर फेंक देंगे.' योएल 1:10-12, 17-20; आमोस 8:3.

ये विपत्तियाँ सर्वव्यापी नहीं होंगी, नहीं तो पृथ्वी के निवासी पूर्णतः नष्ट हो जाते। फिर भी ये वे सबसे भयावह प्रकोप होंगे जिन्हें मर्त्यों ने कभी जाना है। परख की अवधि के समाप्त होने से पहले मनुष्यों पर हुए सारे न्याय दया के साथ मिश्रित रहे हैं। मसीह के विनती करते रक्त ने पापी को उसके दोष का पूरा दंड पाने से बचाए रखा है; पर अंतिम न्याय में क्रोध दया की किसी मिलावट के बिना उंडेला जाएगा।

"उस दिन, बहुत-से लोग परमेश्वर की दया की शरण चाहेंगे, जिसका वे इतने लंबे समय से तिरस्कार करते आए हैं। 'देखो, वे दिन आते हैं, प्रभु परमेश्वर कहता है, कि मैं देश में अकाल भेजूँगा—रोटी का अकाल नहीं, न पानी की प्यास, परन्तु प्रभु के वचनों को सुनने का; और वे समुद्र से समुद्र तक, और उत्तर से लेकर पूर्व तक भटकेंगे; प्रभु का वचन खोजने के लिए इधर-उधर दौड़ेंगे, परन्तु उसे न पाएँगे।' आमोस 8:11, 12।" महान संघर्ष, 627-629.

पिछले अनुच्छेद में यह कहा गया था, "वह राष्ट्र जिसके साथ वह लंबे समय तक धैर्य रखता है, और जिसे वह तब तक दण्ड नहीं देगा जब तक कि उसने परमेश्वर के लेखे में अपनी अधर्मता का माप पूरा नहीं कर लिया, अंततः दया से रहित क्रोध का प्याला पिएगा।" इसी अनुच्छेद में उन्होंने यह भी लिखा, "जब परमेश्वर इस्राएल को छुड़ाने ही वाले थे, तब मिस्र पर जो विपत्तियाँ आईं, वे स्वरूप में उन और भी अधिक भयावह और व्यापक दण्डों के समान थीं जो परमेश्वर की प्रजा की अंतिम मुक्ति से ठीक पहले संसार पर आने वाले हैं।" जो राष्ट्र (संयुक्त राज्य अमेरिका) "अधर्म का माप" भर देता है, उसे मिस्र की दस विपत्तियों के समान विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

मिस्र की विपत्तियाँ दो अवधियों में विभाजित थीं। पहली तीन विपत्तियाँ सभी पर आईं, लेकिन अंतिम सात विपत्तियाँ केवल मिस्रियों पर आईं।

और उस दिन मैं गोशेन देश को, जिसमें मेरी प्रजा बसती है, अलग कर दूँगा, कि वहाँ मक्खियों के झुंड न होंगे; ताकि तू जान ले कि मैं पृथ्वी के बीच में यही हूँ। निर्गमन 8:22.

मिस्र की पहली तीन विपत्तियाँ पूरे देश पर आईं, पर गोशेन, जहाँ इब्रानी रहते थे, वहाँ मिस्र की अंतिम सात विपत्तियाँ नहीं आईं। संयुक्त राज्य अमेरिका वह राष्ट्र है जो रविवार के कानून के समय अपने अधर्म का प्याला भर देता है। उस समय राष्ट्रीय धर्मत्याग के बाद राष्ट्रीय विनाश आता है, परन्तु जो विपत्तियाँ राष्ट्रीय विनाश उत्पन्न करती हैं, वे दया के साथ मिली रहती हैं, जब तक कि मीकाएल खड़ा नहीं हो जाता और समस्त मानवजाति के लिए अनुग्रहकाल समाप्त नहीं हो जाता। संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय, जो लोग अभी अपने को सब्त-पालक बताते हैं, उनमें से अधिकांश जो सत्ता में हैं उनके आगे झुक जाएंगे और पशु की छाप स्वीकार करेंगे। उस समय रविवार के कानून का विषय उन लोगों के लिए, जो एडवेंटवाद के बाहर रहे हैं, एक आत्मिक परीक्षा बन जाएगा। संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून से लेकर मीकाएल के खड़े होने तक ग्यारहवें घंटे के मजदूरों का महासंग्रह होगा, परन्तु जिन पर रविवार के कानून से पहले सातवें दिन के सब्त के प्रकाश के लिए उत्तरदायी ठहराया गया है, उनके लिए दरवाज़ा पहले ही बंद हो चुका होगा।

जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं, यह बात अधिक स्पष्ट होती जा रही है कि ईश्वर के न्याय संसार में प्रकट हो रहे हैं। आग, बाढ़ और भूकंप के माध्यम से वह इस पृथ्वी के निवासियों को अपने निकट आने की चेतावनी दे रहा है। वह समय निकट है जब संसार के इतिहास का महान संकट आ पहुँचेगा, जब ईश्वर के शासन की हर गतिविधि को गहरी रुचि और अवर्णनीय आशंका के साथ देखा जाएगा। तेजी से एक के बाद एक ईश्वर के न्याय आएँगे—आग, बाढ़ और भूकंप, साथ ही युद्ध और रक्तपात।

हाय, काश लोग अपनी सुधि लिये जाने के समय को जान पाते! बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने अभी तक इस समय की परखने वाली सच्चाई नहीं सुनी है। बहुत से ऐसे हैं जिनके साथ परमेश्वर का आत्मा प्रयत्नशील है। परमेश्वर के विध्वंसकारी न्याय का समय उन लोगों के लिए दया का समय है जिन्हें यह सीखने का अवसर नहीं मिला कि सत्य क्या है। प्रभु उन पर करुणा से दृष्टि करेंगे। उनका करुणामय हृदय स्पर्शित होता है; बचाने के लिए उनका हाथ अब भी फैला हुआ है, जबकि जो प्रवेश करने को तैयार न थे उनके लिए द्वार बंद कर दिया गया है।

"परमेश्वर की दया उनके दीर्घ धैर्य में प्रकट होती है। वह अपना न्याय रोक रखे हुए है, इस प्रतीक्षा में कि चेतावनी का संदेश सबको सुनाया जाए। ओह, यदि हमारे लोग दुनिया को दया का अंतिम संदेश देने की जो जिम्मेदारी उन पर है, उसे वैसा ही महसूस करें जैसा उन्हें करना चाहिए, तो कितना अद्भुत कार्य हो जाता!" Testimonies, खंड 9, 97.

पिछले अनुच्छेद में उन्होंने यह बताया कि 'परमेश्वर के विनाशकारी न्यायों का समय उन लोगों के लिए दया का समय है जिन्हें यह जानने का अवसर नहीं मिला कि सत्य क्या है।' अगले अनुच्छेद में वह उस काल को 'क्लेश का समय' कहती हैं।

मैंने देखा कि पवित्र विश्रामदिन, परमेश्वर के सच्चे इस्राएल और अविश्वासियों के बीच विभाजन की दीवार है, और रहेगा; और यह कि विश्रामदिन ही वह बड़ा प्रश्न है जो परमेश्वर के प्रिय, प्रतीक्षा कर रहे संतों के हृदयों को एक करेगा। और यदि कोई विश्वास करे, और विश्रामदिन का पालन करे, और उससे जुड़ी आशीष पाए, और फिर उसे छोड़ दे, और पवित्र आज्ञा तोड़ दे, तो वह अपने ही विरुद्ध पवित्र नगर के फाटक बंद कर देगा—उतना ही निश्चित, जितना कि ऊपर स्वर्ग में राज्य करने वाला परमेश्वर है। मैंने देखा कि परमेश्वर के ऐसे लोग भी हैं जो विश्रामदिन को अभी न समझते हैं और न उसका पालन करते हैं। उन्होंने इसके संबंध में प्राप्त प्रकाश को अस्वीकार नहीं किया था। और क्लेश के समय के प्रारंभ में, जब हम आगे बढ़े और विश्रामदिन का संदेश और भी पूर्ण रूप से सुनाया, तो हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए। इससे कलीसिया और नाममात्र के एडवेंटिस्ट क्रुद्ध हो उठे, क्योंकि वे विश्रामदिन के सत्य का खंडन नहीं कर सकते थे। और इसी समय, परमेश्वर के चुने हुए सब ने स्पष्ट देखा कि हमारे पास सत्य है, और वे बाहर निकल आए और हमारे साथ सताव सहा। छोटे झुंड के लिए एक संदेश, 18, 19.

हालाँकि थोड़ा-सा संशोधित, अभी उद्धृत वही अनुच्छेद पुस्तक Early Writings में भी मिलता है। उस पुस्तक में वह अपने "the time of trouble" संबंधी कथन पर टिप्पणी शामिल करती हैं। A Word to the Little Flock, 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा के बाद निराश किंतु विश्वासी मिलराइट्स का पहला प्रकाशन था, और दशकों बाद, जब संपादकों ने उस पुस्तिका के कुछ अंशों को पुस्तक Early Writings में सम्मिलित करने के लिए उपयोग किया, तो उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "the time of trouble" से अभिप्राय सात अंतिम विपत्तियाँ नहीं थीं, क्योंकि जब सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाती हैं तो न्यायों के साथ दया का कोई मिश्रण नहीं रहता।

1. पृष्ठ 33 पर निम्नलिखित दिया गया है: 'मैंने देखा कि पवित्र सब्त परमेश्वर के सच्चे इस्राएल और अविश्वासियों के बीच अलग करने वाली दीवार है और रहेगी; और कि सब्त वह महान प्रश्न है जो परमेश्वर के प्रिय, प्रतीक्षारत संतों के हृदयों को एक करेगा। मैंने देखा कि परमेश्वर के ऐसे बच्चे हैं जो सब्त को नहीं समझते और नहीं मानते। उन्होंने इसके विषय में मिली ज्योति को अस्वीकार नहीं किया है। और क्लेश के समय के आरम्भ में, जब हम आगे बढ़ें और सब्त का अधिक पूर्ण रीति से प्रचार किया, तब हम पवित्र आत्मा से भर गए।'

यह दर्शन 1847 में दिया गया था, जब एडवेंट के भाई-बंधुओं में से बहुत ही कम लोग विश्रामदिन का पालन कर रहे थे, और उनमें से भी बहुत कम यह मानते थे कि उसका पालन इतना महत्वपूर्ण है कि वह परमेश्वर की प्रजा और अविश्वासियों के बीच एक रेखा खींच दे। अब उस दर्शन की पूर्ति दिखाई देने लगी है। यहां उल्लिखित 'उस क्लेश के समय का आरम्भ' का अभिप्राय उन विपत्तियों के उंडेले जाने के समय से नहीं है, वरन् उनसे ठीक पहले की थोड़ी अवधि से है, जब मसीह पवित्रस्थान में होंगे। उसी समय, जब उद्धार का कार्य समापन पर होगा, पृथ्वी पर क्लेश आएँगे, और जातियाँ क्रोधित होंगी, तो भी उन्हें रोके रखा जाएगा ताकि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न पड़े। उसी समय 'परवर्षा,' अथवा प्रभु की उपस्थिति से आनेवाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत के उच्च स्वर को शक्ति मिले, और पवित्र जन उस काल में स्थिर रहने के लिए तैयार हों, जब अन्तिम सात विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी। Early Writings, 85.

संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय राष्ट्रीय धर्मत्याग के बाद राष्ट्रीय विनाश होगा। उसी रविवार के कानून पर संयुक्त राज्य अमेरिका में एडवेंटिस्ट धर्म दो वर्गों में विभाजित हो जाएगा; एक पशु का चिह्न प्राप्त करेगा, दूसरा परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय विनाश मिस्र की पहली तीन विपत्तियों द्वारा दर्शाया गया है। वे दंड मानव जाति के अनुग्रह काल के समाप्त होने तक जारी रहते हैं; फिर दया के साथ मिश्रित न होने वाली अंतिम सात विपत्तियाँ उंडेली जाती हैं।

मेरा मुद्दा मिस्र के भविष्यसूचक इतिहास से कम और इस तथ्य से अधिक जुड़ा है कि एलेन वाइट मिस्र को उस राष्ट्र के प्रतीक के रूप में पहचानती हैं जो समस्त विश्व को पशु का चिह्न ग्रहण करने के लिए मजबूर करता है, क्योंकि ऐसा करते हुए वे आरंभ के द्वारा अंत का चित्रण करती हैं, जो कि "अल्फा और ओमेगा" के रूप में यीशु की भविष्यसूचक पहचान है। निर्गमन की कथा में, जब प्रभु प्राचीन इस्राएल के साथ वाचा में प्रवेश करते हैं, वे स्वयं को एक नए नाम से परिचित कराते हैं।

तब प्रभु ने मूसा से कहा, अब तू देखेगा कि मैं फिरौन के साथ क्या करूँगा: क्योंकि बलपूर्वक वह उन्हें जाने देगा, और बलपूर्वक ही वह उन्हें अपनी भूमि से निकाल देगा।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं यहीवा हूँ। मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब के समक्ष सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम से प्रगत हुआ था, परन्तु अपने नाम यहीवा से वे मुझे नहीं जानते थे।"

और मैंने उनसे अपनी वाचा भी स्थापित की है कि उन्हें कनान की भूमि दूँ — उनके परदेश-निवास की वह भूमि, जहाँ वे परदेसी थे। और मैंने इस्राएल की सन्तानों की कराह भी सुनी है, जिन्हें मिस्री दासता में बाँधे हुए हैं; और मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है। इसलिए इस्राएल की सन्तानों से कहो: मैं यहीवा हूँ, और मैं तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल लूँगा, और तुम्हें उनके दासत्व से छुड़ा दूँगा; मैं फैली हुई भुजा और बड़े-बड़े दंडों के द्वारा तुम्हारा उद्धार करूँगा। और मैं तुम्हें अपने लिए एक प्रजा बना लूँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा; और तुम

जानोगे कि मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर, हूँ, जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालता हूँ। और मैं तुम्हें उस देश में ले आऊँगा, जिसके विषय में मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब को देने की शपथ खाई थी; और मैं उसे तुम्हें विरासत के रूप में दूँगा: मैं यहोवा हूँ।

और मूसा ने इस्राएलियों से ऐसा ही कहा; परन्तु मन की पीड़ा और कठोर दासता के कारण उन्होंने मूसा की बात न सुनी। निर्गमन 6:1-9।

यहाँ प्रभु मूसा को अपनी वाचा के प्रतिनिधि के रूप में ठहरा रहे हैं, जैसे याकूब, इसहाक और अब्राहम थे। मूसा के समय तक "यहोवा" नाम अब्राहम और उसके वंशजों को ज्ञात नहीं था, और जब अब्राहम की वाचा का नवीकरण हुआ—जब इब्रानियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया जाना था—तो प्रभु ने अपने चरित्र का एक नया प्रकाशन प्रकट किया, क्योंकि भविष्यवाणी की दृष्टि से नाम किसी के चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। जब अब्राहम ने प्रभु के साथ वाचा बाँधी, तो प्रभु ने उसका नाम बदलकर अब्राहम रखा। मिस्र की गुलामी की भविष्यवाणी के प्रारम्भ में वाचा के मानवीय प्रतिनिधि का नाम बदल दिया गया, और उस भविष्यवाणी के अंत में प्रभु ने अपने लिए एक नया नाम प्रकट किया।

पंद्रहवें अध्याय में अब्राहम ने वाचा बाँधी, और वहीं मिस्र में चार सौ वर्षों के दासत्व की भविष्यवाणी प्रकट की गई। सत्रहवें अध्याय में अब्राहम को खतना का संस्कार दिया गया और उसके तथा सारा के नाम बदल दिए गए।

चार सौ वर्ष बाद, अब्राहम की चार सौ वर्षों की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए मूसा को उठाया गया। अब्राहम, इसहाक, याकूब और मूसा सभी उन एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अंतिम दिनों में प्रभु के साथ वाचा में प्रवेश करते हैं।

"इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में, उसकी आज्ञाओं का पालन करने वाले लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा का नवीनीकरण किया जाना है।" रिव्यू एंड हेरल्ड, 26 फरवरी, 1914.

पशु का चिह्न स्वीकार करने वाले विश्रामदिन मानने वालों का परमेश्वर की मुहर प्राप्त करने वाले विश्रामदिन मानने वालों से अलगवार रविवार के क़ानून के लागू होने पर पूरा होता है। यह विभाजन दस कुँवारियों के दृष्टांत में दर्शाया गया है।

मत्ती 25 की दस कुँवारियों का दृष्टान्त एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को भी दर्शाता है। महान संघर्ष, 393.

"मुझे अक्सर दस कुँवारियों का दृष्टान्त याद दिलाया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हो चुका है और आगे भी होगा, क्योंकि इसका इस समय के लिए विशेष अनुप्रयोग है; और, तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की भाँति, यह पूरा हो चुका है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।" रिव्यू एंड हेरल्ड, 19 अगस्त, 1890.

दृष्टांत 22 अक्टूबर, 1844 को पूरा हुआ, जब मिलरवादी इतिहास की बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ अलग कर दी गईं। एडवेंटवाद की शुरुआत उसके अंत का द्योतक है, और अंत में होने वाला विभाजन दस कुँवारियों के दृष्टांत की पूर्ति है, और अंत में होने वाला यह विभाजन रविवार के कानून से उत्पन्न होता है।

"पुनः, ये दृष्टांत सिखाते हैं कि न्याय के बाद कोई अनुग्रहकाल नहीं होगा। जब सुसमाचार का कार्य पूरा हो जाता है, तो तत्काल ही अच्छे और बुरे के बीच पृथक्करण होता है, और प्रत्येक वर्ग की नियति सदा के लिए निश्चित हो जाती है।" Christ's Object Lessons, 123.

दस कुँवारियों का दृष्टान्त यह बताता है कि एडवेंटवादी समुदाय की बुद्धिमान कुँवारियाँ परमेश्वर की मुहर प्राप्त करती हैं, और एडवेंटवादी समुदाय की मूर्ख कुँवारियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के क़ानून के लागू होने पर पशु का चिह्न प्राप्त करती हैं। मूर्ख कुँवारियों को लाओदीकियाई के रूप में भी दर्शाया गया है।

"मूर्ख कन्याओं द्वारा प्रतीकित कलीसिया की अवस्था को लाओदीकियाई अवस्था भी कहा जाता है।" रिव्यू एंड हेराल्ड, 19 अगस्त, 1890.

अंतिम दिनों में, जब परमेश्वर अपनी आज्ञाओं का पालन करने वाले लोगों के साथ अपनी वाचा का नवीनीकरण करेगा, तब वह अपने लिए एक नया नाम प्रकट करेगा, जैसा उसने मूसा के समय वाचा का नवीनीकरण करते समय किया था। मूर्ख कन्याओं की दशा यह है कि उनके पास तेल नहीं है, और लाओदीकियावासियों की दशा यह है कि वे इतने अंधे हैं कि यह भी नहीं देख पाते कि उनके पास तेल नहीं है। यह स्पष्ट है कि यदि मूर्ख कन्याएँ लाओदीकियावासी हैं, तो बुद्धिमान कन्याएँ फिलाडेल्फियावासी हैं।

और फिलाडेल्फिया की कलीसिया के दूत को लिख: ये बातें वह कहता है जो पवित्र है, जो सत्य है, जिसके पास दाऊद की कुंजी है; जो खोलता है और जिसे कोई बंद नहीं कर सकता; और जो बंद करता है और जिसे कोई खोल नहीं सकता: मैं तेरे कामों को जानता हूँ; देख, मैंने तेरे सामने एक खुला द्वार रखा है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता; क्योंकि तेरे पास थोड़ी सामर्थ्य है, और तूने मेरे वचन का पालन किया है, और मेरे नाम से इनकार नहीं किया है।

देख, मैं शैतान की सभा के उन लोगों को, जो कहते हैं कि वे यहूदी हैं, और हैं नहीं, पर झूठ बोलते हैं; देख, मैं उन्हें ऐसा कर दूँगा कि वे आकर तेरे पाँवों के सामने दण्डवत करें, और यह जान लें कि मैंने तुझ से प्रेम किया है। क्योंकि तूने मेरे धैर्य के वचन को मान रखा है, मैं भी तुझे उस परीक्षा की घड़ी से बचा रखूँगा, जो सारी दुनिया पर आनेवाली है, कि पृथ्वी पर रहनेवालों की परीक्षा करे।

देखो, मैं शीघ्र आने वाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे दृढ़ता से थामे रह, ताकि कोई तेरा मुकुट न छीन ले। जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मंदिर में एक खंभा बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, जो नया यरूशलेम है, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम लिखूँगा। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। प्रकाशितवाक्य 3:7-13.

फिलाडेल्फिया के लोग एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करते हैं, और ihnen यह वादा किया गया है कि परमेश्वर अपना नया नाम उन पर लिखेगा। जब प्रभु उन एक लाख चवालीस हजार से वाचा बाँधेगा, तो वह अपना एक नया नाम प्रकट करेगा। प्रभु ने अब्राहम से कहा कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

जब अब्राम निन्यानबे वर्ष का था, तब प्रभु अब्राम पर प्रकट हुआ और उससे कहा, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरे सामने चल और निर्दोष बन। और मैं अपने और तेरे बीच अपनी वाचा स्थापित करूँगा, और तुझे अत्यंत बढ़ाऊँगा। तब अब्राम मुँह के बल गिर पड़ा; और परमेश्वर उससे कहने लगा: देख, मेरी वाचा तेरे साथ है, और तू बहुत से राष्ट्रों का पिता होगा। अब से तेरा नाम अब्राम नहीं कहलाएगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैंने तुझे बहुत से राष्ट्रों का पिता ठहराया है। उत्पत्ति 17:1-5.

जब प्रभु ने अब्राहम के समय में एक चुनी हुई प्रजा के साथ पहली बार वाचा बाँधी, तब उन्होंने अपने आप को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में प्रकट किया। जब उन्होंने मूसा के समय में अपनी वाचा के संबंध को आगे बढ़ाया, तब पहली बार उन्होंने अपना नाम यहीवा बताया। जब यीशु बहुतों के साथ एक सप्ताह के लिए वाचा की पुष्टि करने आए, तब उन्होंने परमेश्वर का एक नया नाम प्रकट किया, जिसका पुराने नियम में केवल एक बार उल्लेख हुआ था, और वह भी एक बाबुलवासी द्वारा।

तब राजा नबूकदनेस्सर चकित हो गया, और शीघ्रता से उठ खड़ा हुआ, और बोलकर अपने मंत्रियों से कहा, क्या हमने आग के बीच बंधे हुए तीन पुरुष नहीं डाले थे? उन्होंने उत्तर देकर राजा से कहा, हाँ, हे राजा। उसने उत्तर देकर कहा, देखो, मैं चार पुरुषों को बंधनमुक्त देखता हूँ, वे आग के बीच चलते फिरते हैं, और उन्हें कोई हानि नहीं पहुँची है; और चौथे का रूप परमेश्वर के पुत्र के समान है। दानियेल 3:24, 25.

यह स्थापित करना बहुत आसान है कि दानिय्येल का तीसरा अध्याय संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून की पहचान कराता है। दानिय्येल के तीसरे अध्याय में शद्रक, मेशक और अबेदनगो एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक लाख चवालीस हजार वे हैं जो अंतिम बार वाचा का नवीनीकरण करते हैं। दानिय्येल के तीसरे अध्याय में हम रविवार के कानून और परवर्षा के इतिहास का एक भविष्यसूचक चित्रण देखते हैं। मसीह अपने तीन वीरों के साथ उत्पीड़न की आग में थे और रहेंगे, जो न केवल एक लाख चवालीस हजार का, बल्कि तीन स्वर्गदूतों के संदेशों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। आग में, जो रविवार के कानून के संकट का प्रतीक है, वह अपने एक नाम से पहचाने जाते हैं, और वह ऐसा नाम है जो इतिहास में तब तक प्रकट नहीं होना था जब तक मसीह परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं आ गए। तीसरे अध्याय के इस चित्रण में हम देखते हैं कि संसार के अंत में वाचा का नवीनीकरण करने वाले लोग अंतिम संकट के दौरान मसीह के साथ सहभागिता कर रहे हैं, और मसीह का एक ऐसा नाम है जिसे कोई मनुष्य नहीं जानता था।

मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून का प्रतीक मानी जाने वाली मिस्र से उद्धार पर हमारे विचार-विमर्श से बहुत दूर भटकने से पहले, हमें स्वयं को यह याद दिला लेना चाहिए कि मिस्र में दस विपत्तियों में पहली के आरंभ होने से पहले ही सब के विषय में वास्तविक आंदोलन था।

और फ़िरौन ने कहा, देखो, देश के लोग अब बहुत हो गए हैं, और तुम उन्हें उनके बोझों से विश्राम दे रहे हो। और उसी दिन फ़िरौन ने लोगों के काम कराने वालों और उनके अधिकारियों को आज्ञा दी, यह कहते हुए, अब से तुम प्रजा को ईंटें बनाने के लिए भूसा न देना, जैसा अब तक देते आए हो; उन्हें जाने दो कि वे अपने लिए भूसा स्वयं इकट्ठा करें। और ईंटों की वही गिनती, जो वे अब तक बनाते आए हैं, उन पर ही रखो; उसमें से कुछ भी कम न करना; क्योंकि वे आलसी हैं; इसी कारण वे पुकारते हैं, हम अपने परमेश्वर को बलि चढ़ाने के लिए चलें। इन लोगों पर और भी काम लादो, ताकि वे उसमें लगे रहें; और वे व्यर्थ बातों पर ध्यान न दें। तब लोगों के काम कराने वाले और उनके अधिकारी बाहर गए और लोगों से कहने लगे, फ़िरौन यों कहता है: मैं तुम्हें भूसा नहीं दूंगा। जाओ, जहाँ कहीं तुम पा सको, वहाँ से भूसा ले आओ; फिर भी तुम्हारे काम में से कुछ भी घटाया नहीं जाएगा। सो लोग भूसे के बदले पराली बटोरने के लिए सारे मिस्र देश में तितर-बितर हो गए। और काम कराने वाले उन्हें जल्दी करने को उकसाते हुए कहते थे, अपने काम, अपने प्रतिदिन के हिस्से, उसी प्रकार पूरे करो जैसे जब भूसा मिलता था। और इस्राएलियों के वे अधिकारी, जिन्हें फ़िरौन के काम कराने वालों ने उन पर नियुक्त किया था, पीटे जाते थे, और उनसे पूछा जाता था, तुमने कल और आज, पहले की तरह, ईंट बनाने का अपना काम क्यों पूरा नहीं किया? तब इस्राएलियों के अधिकारी आए और फ़िरौन से पुकारकर कहने लगे, तू अपने दासों के साथ ऐसा क्यों करता है? तेरे दासों को भूसा नहीं दिया जाता, और वे हमसे कहते हैं, ईंट बनाओ; और देख, तेरे दासों को पीटा जाता है, परन्तु दोष तेरे ही लोगों का है। पर उसने कहा, तुम आलसी हो, तुम आलसी हो; इसी कारण तुम कहते हो, हम चलें और यहोवा को बलि चढ़ाएँ। अब जाओ, और काम करो; क्योंकि तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, तौभी तुम्हें ईंटों की वही गिनती देनी होगी। और जब यह कहा गया कि तुम्हारे प्रतिदिन के काम की ईंटों में से कुछ भी घटाया नहीं जाएगा, तब इस्राएलियों के अधिकारियों ने देखा कि उनकी दशा बहुत बुरी हो गई है। निर्गमन 5:5-19.

रविवार के कानून से पहले, सातवें दिन का विश्रामदिन मानने वालों के खिलाफ विरोध लगातार बढ़ेगा, जैसा कि मिस्र पर आई विपत्तियों से पहले हुआ था। मिस्रियों और इब्रानियों, दोनों ने ही, सारी मुसीबतों का कारण मूसा को ठहराया था, ठीक वैसे ही जैसे अहाब ने एलियाह पर आरोप लगाया था।

और ऐसा हुआ कि जब आहाब ने एलियाह को देखा, तो आहाब ने उससे कहा, 'क्या तू ही वह है जो इस्राएल को क्लेश देता है?' तब उसने उत्तर दिया, 'मैंने इस्राएल को क्लेश नहीं दिया; बल्कि इस्राएल को क्लेश तू और तेरे पिता के घराने ने दिया है, क्योंकि तुम ने यहोवा की आज्ञाओं को त्याग दिया है, और तू ने बाअलीम का अनुसरण किया है।' 1 राजा 18:17, 18.

मूसा की कहानी रविवार के कानून के इतिहास को दर्शाती है, और एलिय्याह की कहानी भी रविवार के कानून के इतिहास को दर्शाती है। मूसा और एलिय्याह, साथ ही या अलग-अलग, प्रतीक हैं। मसीह के रूपांतरण के समय, उन्होंने मिलकर उन एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व किया जो नहीं मरते, और उन लोगों का भी जो प्रभु में मरते हैं। मूसा का पुनरुत्थान हुआ; एलिय्याह कभी नहीं मरे। वे वही दो भविष्यद्वक्ता भी हैं जो प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में लोगों को कष्ट देने वाले कहलाते हैं। प्रतीकों के रूप में मूसा और एलिय्याह अनेक सत्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और हम आशा करते हैं कि उस पर बाद में चर्चा करेंगे।

देखो, प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजूँगा। और वह पिताओं का मन बच्चों की ओर, और बच्चों का मन उनके पिताओं की ओर फेर देगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप दूँ। मलाकी 4:5, 6.

मानव अनुग्रह-काल के समाप्त होने से ठीक पहले, "भविष्यद्वक्ता एलिय्याह" एक विशेष संदेश लेकर प्रकट होगा, जो "पितरों का मन पुत्रों की ओर, और पुत्रों का मन उनके पितरों की ओर" फेर देगा। सब भविष्यद्वक्ता संसार के अंत की गवाही देते हैं, और वे सब एकमत हैं।

और भविष्यद्वक्ताओं की आत्माएँ भविष्यद्वक्ताओं के अधीन हैं। क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का कर्ता नहीं, परन्तु शांति का है, जैसा कि पवित्र जनों की सब कलीसियाओं में है। 1 कुरिन्थियों 14:32, 33.

प्रभु के महान और भयानक दिन से ठीक पहले एलिय्याह का संदेश आता है; इसलिए यह वही विशेष संदेश है जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 'यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब 'समय निकट है,' तब एलिय्याह का विशेष संदेश परमेश्वर के दासों को वे बातें दिखाता है जो शीघ्र घटित होने वाली हैं।

यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जो परमेश्वर ने उसे दिया, ताकि वह अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र ही होने वाली हैं; और उसने अपने स्वर्गदूत के द्वारा इसे अपने दास यूहन्ना को भेजकर प्रकट किया; जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, तथा जो कुछ उसने देखा, उन सब की गवाही दी। धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचनों को सुनते हैं, और जो उसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं; क्योंकि समय निकट है। प्रकाशितवाक्य 1:1-3.

ध्यान दें कि जब मलाकी एलिय्याह को एक प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं, तो वे आज्ञाओं के पालन का सीधा उल्लेख भी करते हैं।

मेरे दास मूसा की व्यवस्था को स्मरण करो, जिसके विषय में मैंने होरेब में सारे इस्राएल के लिये—विधियों और नियमों सहित—उसे आज्ञा दी थी। देखो, प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजूँगा; और वह पिताओं का हृदय बच्चों की ओर, और बच्चों का हृदय उनके पिताओं की ओर फेर देगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी पर शाप के साथ प्रहार करूँ। मलाकी 4:4-6.

ये तीन पद पुराने नियम के अंतिम हैं, और इनमें पुराने नियम की अंतिम प्रतिज्ञा के साथ-साथ दस आज्ञाओं का पालन करने पर विशेष बल दिया गया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात "आशीर्वाद" हैं और अंतिम आशीर्वाद उन पर है जो दस आज्ञाओं का पालन करते हैं।

मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, आदि और अंत, प्रथम और अंतिम। धन्य हैं वे जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, कि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले, और वे द्वारों से होकर नगर में प्रवेश करें। प्रकाशितवाक्य 22:13, 14.

पुराने नियम की अंतिम प्रतिज्ञा हमें दस आज्ञाओं को 'स्मरण' रखने के लिए कहती है, परंतु ऐसा करते हुए वह उस एक आज्ञा पर विशेष जोर देती है जिसमें 'स्मरण' का आदेश शामिल है।

विश्रामदिन को स्मरण रखना, कि तू उसे पवित्र माने। छह दिनों तक तू परिश्रम करेगा और अपना सब काम करेगा; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा का विश्रामदिन है: उसमें तू कोई काम न करेगा, न तू, न तेरा पुत्र, न

तेरी पुत्री, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा पशुधन, न वह परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर है; क्योंकि छह दिनों में यहीवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उनमें है, बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहीवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया। निर्गमन 20:8-11.

पुराने और नए नियम दोनों में अंतिम प्रतिज्ञा परमेश्वर की आज्ञाओं पर बल देती है, विशेषकर सातवें दिन के सब्त पर. मलाकी कहता है, "स्मरण करो," और यूहन्ना हमें बताता है कि ऐसा करने वालों पर आशीष है. सातवें दिन का सब्त परमेश्वर की सृष्टि और उसकी सृजन-शक्ति का स्मरण कराता है. सब्त पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में विवाद का विषय भी बन जाता है. जब यूहन्ना उन पर "आशीष" का उल्लेख करता है जो उसकी आज्ञाएँ मानते हैं, तो वह केवल वही लिख रहा है जो यीशु—अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत, प्रथम और अंतिम—ने घोषित किया था. अतः नए नियम की अंतिम प्रतिज्ञा का संबंध सातवें दिन के सब्त से है और उस दिव्य गुण से भी है जो आदि से अंत की पहचान कराता है.

उत्पत्ति, जिसका अर्थ 'आरंभ' है, में उल्लिखित पहली सच्चाई सृष्टिकर्ता, सृष्टि, और सब्त पर विशेष जोर की पहचान कराती है। एक साथ लिया जाए तो, पंक्ति दर पंक्ति, पुराने नियम की शुरुआत और पुराने तथा नए दोनों नियमों के अंत परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में, दस आज्ञाओं पर, सब्त की आज्ञा पर, और इस बात पर कि यीशु आरंभ और अंत हैं, जोर देते हैं।

पुराने नियम की अंतिम प्रतिज्ञा में मलाकी द्वारा भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को एक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया गया है, और वही वह भविष्यद्वक्ता था जिसने ईज़ेबेल और अहाब का सामना किया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ईज़ेबेल को पापसी के प्रतीक के रूप में और 'दस राजाओं' को संयुक्त राष्ट्र के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है। एलिय्याह का अहाब और ईज़ेबेल से सामना, एक लाख चवालीस हज़ार के संयुक्त राष्ट्र से होने वाले सामना का प्रतिनिधित्व करता है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा समर्थित और पापसी द्वारा निर्देशित है। इस्राएल के उत्तर के दस गोत्रों के राजा के रूप में, अहाब दस गोत्रों पर शासनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता था; इस प्रकार वह इसका प्रतिरूप था कि संयुक्त राज्य अमेरिका (अहाब) संयुक्त राष्ट्र (दस गोत्र, या प्रकाशितवाक्य सत्रह के 'दस राजा') को पापसी (ईज़ेबेल) के लिए सब्त-पालकों का उत्पीड़न करने की शक्ति देगा। जब मलाकी एलिय्याह का उपयोग उस संदेश के प्रतीक के रूप में करता है जो प्रभु के महान और भयावह दिन से पहले आता है, तब एलिय्याह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें आधुनिक रोम (अजगर, पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता) द्वारा उत्पीड़ित किया जाता है, जैसे वह साढ़े तीन वर्ष तक ईज़ेबेल द्वारा उत्पीड़ित किया गया था। मलाकी 4:4 में "स्मरण करो" शब्द का प्रयोग करके सब्त पर जोर देना, मलाकी द्वारा चित्रित भविष्यवाणी परिदृश्य में रविवार के कानून के संकट को जोड़ देता है।

पुराने नियम की शुरुआत और उसके अंत की तुलना, और फिर बाइबल की शुरुआत और उसके अंत की तुलना से जो सत्य प्रकट होते हैं, उन पर विचार में और भी बहुत कुछ जोड़े जाने की आवश्यकता है। उत्पत्ति में हमें सृष्टिकर्ता, सृष्टि, और सृष्टि का स्मरण कराने वाला सब्त मिलता है। मलाकी में सब्त की आज्ञा को उस संकट के मुद्दे के रूप में पहचाना गया है जो मानव अनुग्रह-काल के समापन और सात अंतिम विपत्तियों की ओर ले जाता है; या जैसा मलाकी इसे कहता है, 'प्रभु का महान और भयानक दिन'। एलिय्याह उन परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो मरणासन्न संसार के सामने तीसरे स्वर्गदूत का संदेश प्रस्तुत करते हैं।

"आज, एलिय्याह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की आत्मा और सामर्थ्य में, परमेश्वर द्वारा नियुक्त दूत न्यायोन्मुख संसार का ध्यान उन गंभीर घटनाओं की ओर आकर्षित कर रहे हैं, जो अनुग्रहकाल के समापन की अंतिम घड़ियों और राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में मसीह यीशु के प्रगटन से संबंधित होकर शीघ्र घटने वाली हैं।" भविष्यद्वक्ता और राजा, 715, 716.

बाइबल की शुरुआत, जो पुराने नियम की भी शुरुआत है, उसी कथा की पहचान कराती है जो दोनों नियमों के अंत में भी प्रकट होती है; परंतु हर शुरुआत और हर अंत का अपना-अपना सत्य है, जो संदेश पर अलग ढंग से जोर देता है और उसमें योगदान करता है। उत्पत्ति में ध्यान परमेश्वर के कार्यों पर है, और मलाकी में ध्यान उस संदेश पर है जो

आने वाले संकट के प्रति चेतावनी देता है। प्रकाशितवाक्य का अंत “अल्फा और ओमेगा” की पहचान कराता है। नए नियम की पहली पुस्तक में हम निम्नलिखित पढ़ते हैं।

यीशु मसीह की वंशावली की पुस्तक, दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र।

इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ; और इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए; और यहूदा से तामार के द्वारा पेरेस और ज़ेरह उत्पन्न हुए; और पेरेस से हेज़ोन उत्पन्न हुआ; और हेज़ोन से अराम उत्पन्न हुआ; और अराम से अमीनादाब उत्पन्न हुआ; और अमीनादाब से नहशोन उत्पन्न हुआ; और नहशोन से सल्मोन उत्पन्न हुआ; और सल्मोन से रहाब के द्वारा बोअज़ उत्पन्न हुआ; और बोअज़ से रूत के द्वारा ओबेद उत्पन्न हुआ; और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ; और यिशै से राजा दाऊद उत्पन्न हुआ; और राजा दाऊद से उस स्त्री के द्वारा सुलैमान उत्पन्न हुआ जो उरिय्याह की पत्नी रही थी; और सुलैमान से रहूबियाम उत्पन्न हुआ; और रहूबियाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ; और अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ; और आसा से यहोशापात उत्पन्न हुआ; और यहोशापात से योराम उत्पन्न हुआ; और योराम से उज्जिय्याह उत्पन्न हुआ; और उज्जिय्याह से योताम उत्पन्न हुआ; और योताम से आहाज उत्पन्न हुआ; और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ; और हिजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न हुआ; और मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ; और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ; और योशिय्याह से यहोन्याह और उसके भाई उत्पन्न हुए, उस समय के आसपास जब वे बाबुल को बंधुआई में ले जाए गए; और जब वे बाबुल को बंधुआई में ले जाए जा चुके थे, तब यहोन्याह से शालतीएल उत्पन्न हुआ; और शालतीएल से जरुब्बाबेल उत्पन्न हुआ; और जरुब्बाबेल से अबीहूद उत्पन्न हुआ; और अबीहूद से एलियाकिम उत्पन्न हुआ; और एलियाकिम से आज़ोर उत्पन्न हुआ; और आज़ोर से सादोक उत्पन्न हुआ; और सादोक से अहीम उत्पन्न हुआ; और अहीम से एलियूद उत्पन्न हुआ; और एलियूद से एलीआज़र उत्पन्न हुआ; और एलीआज़र से मत्थान उत्पन्न हुआ; और मत्थान से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से मरियम का पति यूसुफ उत्पन्न हुआ, जिससे यीशु उत्पन्न हुआ, जो मसीह कहलाता है।

इस प्रकार अब्राहम से दाविद तक चौदह पीढ़ियाँ हुई; और दाविद से बाबुल में निर्वासन तक चौदह पीढ़ियाँ; और बाबुल में निर्वासन से मसीह तक चौदह पीढ़ियाँ।

अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी माता मरियम की यूसुफ से सगाई हो चुकी थी, और वे एक साथ रहने से पहले, वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई। तब उसका पति यूसुफ, जो धर्मी व्यक्ति था, और उसे सबके सामने बदनाम नहीं करना चाहता था, उसे चुपके से छोड़ देने का विचार करने लगा। परन्तु जब वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था, तो देखो, प्रभु का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया और कहा, “हे यूसुफ, दाविद की संतान, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में अपने पास लेने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में धारण हुआ है वह पवित्र आत्मा से है।”

और वह एक पुत्र जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार देगा। और यह सब इसलिए हुआ कि जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: “देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी, और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,” जिसका अर्थ है, “परमेश्वर हमारे साथ।” तब यूसुफ नींद से उठकर वैसा ही किया जैसा प्रभु के स्वर्गदूत ने उसे आज्ञा दी थी, और अपनी पत्नी को अपने पास ले आया; और जब तक उसने अपना पहिलौठा पुत्र न जन लिया, तब तक उसने उसके साथ संग नहीं किया; और उसने उसका नाम यीशु रखा। मत्ती 1:1-25.

नए नियम का आरंभ, पुराने नियम के आरंभ और अंत तथा नए नियम के अंत से मेल खाता है, क्योंकि यह परमेश्वर की सृजन-शक्ति पर बल देता है; क्योंकि वही शक्ति, जिसका प्रयोग मसीह ने छह दिनों में सब कुछ रचने के लिए किया, वही शक्ति वह 'अपने लोगों को उनके पापों से बचाने' के लिए उपयोग करते हैं। इम्मानुएल शब्द, जैसा कि इस खंड में यशायाह के लेखन से उद्धृत है, का अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ"। वह अपनी दिव्यता को हमारी मानवता के साथ मिलाकर अपने लोगों के भीतर वास करते हैं, और यही वही संयोजन था जिसे उन्होंने मरियम में देहधारण करते समय पूरा किया।

पूर्ण आज्ञाकारिता से कम कुछ भी परमेश्वर की अपेक्षा के मानक को पूरा नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी अपेक्षाओं को अस्पष्ट नहीं छोड़ा है। मनुष्य को अपने साथ सामंजस्य में लाने के लिए जो आवश्यक नहीं है, ऐसा कुछ भी उन्होंने आदेशित नहीं किया है। हमें पापियों को उनके चरित्र के आदर्श की ओर इंगित करना है और उन्हें मसीह के पास ले जाना है, जिनके अनुग्रह से ही इस आदर्श तक पहुँचा जा सकता है।

उद्धारकर्ता ने अपने ऊपर मानवता की दुर्बलताओं को ले लिया और एक निष्पाप जीवन जिया, ताकि लोगों को यह भय न रहे कि मानवीय स्वभाव की कमजोरी के कारण वे विजय प्राप्त नहीं कर सकते। मसीह हमें 'दैवीय स्वभाव के सहभागी' बनाने आए, और उनका जीवन यह घोषित करता है कि जब मनुष्यता दिव्यता के साथ संयुक्त होती है, तो वह पाप नहीं करती। चिकित्सा की सेवा, 180.

नए नियम की शुरुआत यह स्पष्ट करती है कि यीशु ने हमारे मानवीय स्वभाव को कहाँ, कब और क्यों अंगीकार किया। उन्होंने यह इसलिए किया कि दिखा सकें कि मानवीय सामर्थ्य जब दिव्य सामर्थ्य के साथ मिलती है तो पाप नहीं होता। पाप व्यवस्था का उल्लंघन है; और मलाकी कहते हैं कि हमें उस व्यवस्था को 'स्मरण' रखना है। यूहन्ना हमें बताता है कि जो लोग व्यवस्था का पालन करते हैं, और इसलिए जो पाप नहीं करते, वे स्वर्गीय द्वारों से प्रवेश कर सकते हैं। मत्ती दर्शाता है कि एक पापी पाप पर विजय पा सकता है, जैसे मसीह ने पाई। जब मसीह हमारे भीतर होते हैं (महिमा की आशा), तो हमारे भीतर वही सृजनात्मक सामर्थ्य होता है जिसने ब्रह्मांड रचा। यह सम्भव तब हुआ जब मसीह ने मानव परिवार में प्रवेश करने का चुनाव किया, और आगे के समस्त अनंतकाल के लिए वे केवल परमेश्वर का पुत्र ही नहीं, बल्कि मनुष्य का पुत्र भी बन गए।

मनुष्य के अनुग्रहकाल के समाप्त होने से ठीक पहले, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से परमेश्वर की प्रजा के सामने सत्य का एक विशेष संदेश प्रकट किया जाता है। वही विशेष संदेश मलाकी का 'एलियाह संदेश' भी है, जो 'प्रभु के भयावह दिन' से ठीक पहले प्रचारित किया जाता है।

दोनों नियमों की शुरुआत में और नए नियम के अंत में, परमेश्वर के विशिष्ट गुण बताए गए हैं। उत्पत्ति में वह सृष्टिकर्ता है, और प्रकाशितवाक्य के अंत में वह अल्फा और ओमेगा है। नए नियम की शुरुआत में वह मनुष्य का पुत्र बनता है। और पुराने नियम के अंत में, हमें वह सिद्धांत मिलता है जिसका उपयोग दूत एलियाह उस संदेश को पूरा करने के लिए करता है—कि वह पिताओं के हृदय बच्चों की ओर और बच्चों के हृदय पिताओं की ओर फेर देगा।

भविष्यवाणी का वही सिद्धांत, जिसे एलियाह अपनी चेतावनी का संदेश प्रस्तुत करने के लिए लागू करता है, ठीक वही है जो प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना को करने की आज्ञा दी गई थी। एलियाह "पितरों के मन बच्चों की ओर, और बच्चों के मन उनके पितरों की ओर फेर देगा," और यूहन्ना से कहा गया कि जो बातें उस समय थीं उन्हें लिखे, और ऐसा करते हुए वह उन बातों को भी लिख रहा होगा जो आने वाली थीं। यूहन्ना का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया कि भविष्यवाणी के वचन में अल्फा और ओमेगा का सिद्धांत कैसे कार्य करता है, और एलियाह अपना संदेश इसी सिद्धांत पर आधारित करेगा। जब हम बाइबल की शुरुआत की तुलना उसकी समाप्ति से करते हैं, तो हम पुराने की नए से तुलना कर रहे होते हैं। पिता अपने बच्चे की शुरुआत होता है, और बच्चा पिता की परिणति होता है। एक लाख चवालीस हजार अब्राहम की संतानों की अंतिम पीढ़ी हैं, और वह इतिहास जिसमें परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी, उस इतिहास का पूर्वरूप है जब परमेश्वर वही वाचा एक लाख चवालीस हजार के साथ नवीकृत करता है।

इस कारण यह विश्वास से है, ताकि यह अनुग्रह से हो, ताकि प्रतिज्ञा सब वंश के लिए सुनिश्चित हो; केवल उनके लिए नहीं जो व्यवस्था से हैं, परन्तु उनके लिए भी जो इब्राहीम के विश्वास से हैं—इब्राहीम, जो हम सबका पिता है। रोमियों 4:16.

एलियाह का संदेश अल्फा और ओमेगा के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि पिता अल्फा हैं और बच्चे ओमेगा। एलियाह का संदेश पिताओं के हृदयों को बच्चों की ओर मोड़ देगा। मसीह ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को एलियाह के रूप में पहचाना, और एलेन व्हाइट ने विलियम मिलर को एलियाह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला दोनों बताया। इन सभी प्रतिनिधि पुरुषों के संदेश को पिताओं के हृदयों को बच्चों की ओर और इसके विपरीत भी मोड़ने

वाला बताया गया। वह कार्य मनुष्यों के हृदयों को उनके स्वर्गीय पिता की ओर मोड़ने में संदेश के प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है, पर उसका अर्थ इससे बढ़कर है, क्योंकि वह उस कार्य का एक प्रतीक है। बाइबल की भविष्यवाणियों में प्रतीकों के एक से अधिक अर्थ होते हैं और उन्हें संदर्भ के आधार पर पहचाना जाना चाहिए।

"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को महान बनाने वाली बात क्या थी? उसने यहूदी राष्ट्र के शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत परंपराओं के भारी बोझ के प्रति अपना मन बंद कर लिया, और उसे ऊपर से आने वाली बुद्धि के लिए खोल दिया। उसके जन्म से पहले पवित्र आत्मा ने यूहन्ना के विषय में यह गवाही दी: 'वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा, और न तो दाखरस पीएगा और न मदिरा; और वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा.... और इस्राएल की संतान में से बहुतों को वह उनके परमेश्वर प्रभु की ओर फेर देगा। और वह उसके आगे एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में चलेगा, ताकि पिताओं के मन बच्चों की ओर, और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की बुद्धि की ओर फेर दे; ताकि प्रभु के लिए एक तैयार की हुई प्रजा बना दे।' लूका 1:15-17." माता-पिता, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए परामर्श, 445.

यह संदेश इस प्रकार तैयार किया गया है कि जो सुनना चुनते हैं वे अपने हृदय स्वर्गीय पिता की ओर मोड़ लें, तथापि चेतावनी संदेश को पहुँचाने के लिए जो प्रमुख भविष्यसूचक सिद्धांत प्रयुक्त होगा, वह यह होगा कि मसीह अल्फा और ओमेगा हैं, प्रथम और अंतिम, आरंभ और अंत। एलिय्याह संदेश परमेश्वर के भविष्यसूचक वचन की प्रस्तुति पर इस दृष्टिकोण से आधारित है कि यीशु मसीह परमेश्वर का वचन हैं, और बाइबल को संचालित करने वाले नियम भी उनके चरित्र के गुण हैं।

"परमेश्वर की व्यवस्था स्वयं परमेश्वर जितनी ही पवित्र है। यह उसकी इच्छा का प्रकाशन है, उसके चरित्र का प्रतिरूप है, और दैवीय प्रेम तथा ज्ञान की अभिव्यक्ति है। सृष्टि का सामंजस्य इस पर निर्भर करता है कि सभी प्राणी, हर वस्तु—सजीव और निर्जीव—सृष्टिकर्ता की व्यवस्था के साथ पूर्ण अनुरूपता में हों। परमेश्वर ने न केवल सजीव प्राणियों के शासन के लिए, बल्कि प्रकृति की समस्त क्रियाओं के संचालन के लिए भी नियम निर्धारित किए हैं। सब कुछ निश्चित नियमों के अधीन है, जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। परंतु जहाँ प्रकृति की हर वस्तु प्राकृतिक नियमों द्वारा शासित है, वहीं पृथ्वी के समस्त निवासियों में मनुष्य ही नैतिक व्यवस्था के प्रति उत्तरदायी है। सृष्टि की सर्वोच्च कृति मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी अपेक्षाओं को समझने, अपनी व्यवस्था के न्याय और कल्याणकारी स्वरूप को समझने, और उस पर उस व्यवस्था के पवित्र अधिकारों को पहचानने की सामर्थ्य दी है; और मनुष्य से अविचल आज्ञाकारिता अपेक्षित है।" पितृपुरुष और नबी, 53.

सब कुछ (और इसमें बाइबल भी शामिल है, क्योंकि बाइबल भी एक चीज़ है और यदि वह एक चीज़ है, तो वह सब कुछ का हिस्सा है) अटल नियमों के अधीन है। बाइबल के अटल नियम या सिद्धांत हैं जो उसकी सही व्याख्या को नियंत्रित करते हैं। उन नियमों में से एक यह है कि बाइबल किसी चीज़ के अंत को उसी चीज़ के आरंभ के साथ पहचानती है। यीशु परमेश्वर का वचन हैं, और वे प्रथम और अंतिम हैं, और यह एक "अटल नियम" तथा उनके चरित्र का एक गुण है।

हमने एलिय्याह के इस परिचय का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि पुराने और नए नियम दोनों के आरंभ और अंत आपस में मेल खाते हैं। बाइबल का अंत—जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अंत भी है—प्रकाशितवाक्य की शुरुआत से भी मेल खाता है। उन्हीं सत्यों के पाँच साक्षी एक ऐसे सिद्धांत पर आधारित हैं—जो परमेश्वर के स्वभाव का एक गुण है—कि परमेश्वर का वचन किसी बात के अंत को सदैव उसी बात की शुरुआत से चित्रित करता है। यह वास्तविकता इस बात के अर्थ का एक हिस्सा है कि यीशु मसीह अल्फा और ओमेगा हैं।

पातमोस के द्वीप पर प्रेरित यूहन्ना के सामने कलीसिया के अनुभवों के गहरे और रोमांचकारी दृश्य प्रकट किए गए। अत्यंत रुचि और महान महत्व के विषय उसे चित्रों और प्रतीकों में दिखाए गए, ताकि परमेश्वर की प्रजा अपने सामने आने वाले संकटों और संघर्षों के विषय में अवगत हो सके। समय के बिल्कुल अंत तक के ईसाई जगत का इतिहास यूहन्ना को प्रकट किया गया। उसने बड़ी स्पष्टता से परमेश्वर की प्रजा की स्थिति, उनके खतरे, संघर्ष, और अंतिम मुक्ति को देखा। वह उस समापन संदेश को दर्ज करता है जो पृथ्वी की फसल को पकाने

वाला है, या तो स्वर्गीय भंडारगृह के लिए पूलों के रूप में, या अंतिम दिन की आग के लिए जलावन के गट्टरों के रूप में।

दर्शन में यूहन्ना ने वे परीक्षाएँ देखीं जिन्हें परमेश्वर के लोग सत्य के कारण सहेंगे। उसने देखा कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में, उन दमनकारी शक्तियों के सामने जो उन्हें आज्ञाभंग करने के लिए बाध्य करना चाहती थीं, वे कैसी अडिग दृढ़ता रखते हैं, और उसने पशु और उसकी प्रतिमा पर उनकी अंतिम विजय भी देखी।

एक महान लाल अजगर, चित्ते के समान एक पशु, और मेमने जैसे सींगों वाले एक पशु के प्रतीकों के अंतर्गत, परमेश्वर की व्यवस्था को विशेष रूप से रौंदने और उसके लोगों को सताने में संलग्न होने वाली पृथ्वी की सरकारें यूहन्ना के सामने प्रस्तुत की गईं। यह युद्ध समय के अंत तक चलता रहता है। एक पवित्र स्त्री और उसके बच्चों द्वारा प्रतीकित परमेश्वर के लोगों को अत्यंत अल्पसंख्यक के रूप में दिखाया गया। अंतिम दिनों में केवल एक शेष बचा हुआ दल ही अस्तित्व में था। इनके विषय में यूहन्ना कहता है कि वे 'जो परमेश्वर की आज्ञाएँ मानते हैं और यीशु मसीह की गवाही रखते हैं'।

मूर्तिपूजा के माध्यम से, और फिर पोपाई शासन के माध्यम से, शैतान ने अनेक शताब्दियों तक अपनी शक्ति का प्रयोग किया ताकि पृथ्वी से परमेश्वर के विश्वासयोग्य साक्षियों को मिटा दे। मूर्तिपूजक और पोपवादी दोनों ही उसी अजगर की आत्मा से संचालित थे। उनमें केवल इतना ही अंतर था कि परमेश्वर की सेवा का ढोंग करने वाली पोपाई व्यवस्था अधिक खतरनाक और क्रूर शत्रु थी। रोमन-कैथोलिकवाद के माध्यम से शैतान ने संसार को बंदी बना लिया। परमेश्वर की कहलाने वाली कलीसिया भी इस भ्रम की पंक्तियों में बहा दी गई, और एक हज़ार से अधिक वर्षों तक परमेश्वर के लोग अजगर के कोप के अधीन दुख सहते रहे। और जब पोपाई शासन, अपनी शक्ति से वंचित होकर, उत्पीड़न से बाज आने को विवश हुआ, तो यूहन्ना ने देखा कि एक नई शक्ति ऊपर आ रही है जो अजगर की आवाज़ की प्रतिध्वनि करेगी और उसी क्रूर और ईशनिंदक कार्य को आगे बढ़ाएगी। यह शक्ति, जो कलीसिया और परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करने वाली अंतिम शक्ति है, मेमने जैसे सींगों वाले एक पशु द्वारा प्रतीकित थी। इससे पहले के पशु समुद्र से उठे थे, परन्तु यह पृथ्वी से ऊपर आया, जो उस राष्ट्र के शांतिपूर्ण उदय का सूचक था जिसका वह प्रतीक है। 'मेमने जैसे दो सींग' संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के चरित्र का उत्तम प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसा कि उसके दो मूलभूत सिद्धांतों—गणतंत्रवाद और प्रोटेस्टेंटवाद—में व्यक्त है। ये सिद्धांत हमारे, एक राष्ट्र के रूप में, सामर्थ्य और समृद्धि का रहस्य हैं। जिन लोगों ने सबसे पहले अमेरिका के तटों पर आश्रय पाया, वे इस बात से आनन्दित हुए कि वे पोपवाद के दंभी दावों और राजतंत्रीय शासन के अत्याचार से मुक्त देश में पहुँच गए थे। उन्होंने नागरिक और धार्मिक स्वतंत्रता की व्यापक नींव पर एक सरकार स्थापित करने का निश्चय किया।

परन्तु भविष्यसूचक कलम की कठोर रेखाएँ इस शांत दृश्य में एक परिवर्तन प्रकट करती हैं। भेड़ के समान सींगों वाला पशु अजगर की आवाज़ में बोलता है, और 'वह पहले पशु के सामने उसके सारे अधिकार का प्रयोग करता है।' भविष्यवाणी यह घोषित करती है कि वह पृथ्वी पर निवास करने वालों से कहेगा कि वे उस पशु की प्रतिमा बनाएँ, और यह कि 'वह छोटे और बड़े, धनी और निर्धन, स्वतंत्र और दास, सबको उनके दाहिने हाथ में या उनके ललाट पर एक चिह्न लेने के लिए बाध्य करता है; और यह कि कोई मनुष्य खरीद या बेच न सके, सिवाय उसके जिसके पास वह चिह्न, या उस पशु का नाम, या उसके नाम की संख्या हो।' इस प्रकार प्रोटेस्टेंटवाद पोपतंत्र के पदचिह्नों का अनुसरण करता है।

इसी समय तीसरा स्वर्गदूत आकाश के मध्य उड़ता हुआ दिखाई देता है और यह घोषणा करता है: 'यदि कोई मनुष्य पशु और उसकी प्रतिमा की आराधना करे, और अपने ललाट या अपने हाथ में उसका चिह्न ले, तो वही परमेश्वर के क्रोध का वह दाखमधु पियेगा, जो उसके प्रकोप के प्याले में बिना मिलावट उंडेला गया है।' 'यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु का विश्वास रखते हैं।' संसार के पूर्ण विपरीत एक छोटा समूह अडिग खड़ा है, जो परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा से जरा भी नहीं डिगेगा। यही वे लोग हैं जिनके विषय में यशायाह कहता है कि वे परमेश्वर की व्यवस्था में पड़ गए भंग को भरते हैं; वे पुराने उजड़े स्थानों का पुनर्निर्माण कर रहे हैं, और अनेक पीढ़ियों की नींव को फिर से उठा रहे हैं।

मनुष्यों को कभी दी गई सबसे गंभीर चेतावनी और सबसे भयानक धमकी तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में निहित है। वह पाप जो परमेश्वर के दया-रहित क्रोध को बुला लाता है, अवश्य ही अत्यंत जघन्य चरित्र का होगा। क्या इस पाप की प्रकृति के विषय में संसार को अंधकार में छोड़ दिया जाएगा?—कदापि नहीं। परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता। अज्ञानता में किए गए पापों पर उसका क्रोध कभी नहीं आता। उसके न्याय पृथ्वी पर आने से पहले, इस पाप के संबंध में प्रकाश संसार के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए, ताकि मनुष्य जान सके कि ये न्याय क्यों किए जाने हैं, और उसे उनसे बच निकलने का अवसर मिल सके।

यह चेतावनी समेटे हुए संदेश, मनुष्य का पुत्र प्रकट होने से पहले घोषित किया जाने वाला अंतिम संदेश है। वे चिन्ह, जो स्वयं उसने दिए हैं, यह घोषित करते हैं कि उसका आगमन निकट ही है। लगभग चालीस वर्षों से तीसरे स्वर्गदूत का संदेश गूँज रहा है। महान संघर्ष के परिणामस्वरूप दो दल उभरते हैं: वे जो 'पशु और उसकी प्रतिमा' की उपासना करते हैं और उसका चिह्न ग्रहण करते हैं, और वे जो 'जीवित परमेश्वर की मुहर' प्राप्त करते हैं, जिनके ललाट पर पिता का नाम लिखा है। यह कोई दिखाई देने वाला चिह्न नहीं है। वह समय आ गया है जब अपनी आत्मा के उद्धार में रुचि रखने वाले सब लोगों को ईमानदारी और गंभीरता से यह पूछना चाहिए: परमेश्वर की मुहर क्या है? और पशु का चिह्न क्या है? हम उसे ग्रहण करने से कैसे बच सकते हैं?

परमेश्वर की मुहर, जो उनके अधिकार का चिह्न या संकेत है, चौथी आज्ञा में पाई जाती है। यह दस आज्ञाओं की वही एकमात्र आज्ञा है जो स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की ओर संकेत करती है और सच्चे परमेश्वर को सभी झूठे देवताओं से स्पष्ट रूप से अलग करती है। सम्पूर्ण शास्त्रों में परमेश्वर की सृजनात्मक सामर्थ्य के तथ्य को इस प्रमाण के रूप में उद्धृत किया गया है कि वह सब अन्यजातियों के देवताओं से ऊपर है।

चौथी आज्ञा द्वारा निर्धारित सब्त सृष्टि के कार्य को स्मरण करने के लिए स्थापित किया गया था, ताकि मनुष्यों के मन सदा सच्चे और जीवित परमेश्वर की ओर लगे रहें। यदि सब्त सदा मनाया गया होता, तो कभी कोई मूर्तिपूजक, नास्तिक, या अविश्वासी नहीं होता। परमेश्वर के पवित्र दिन का श्रद्धापूर्ण पालन मनुष्यों के मनो को उनके सृष्टिकर्ता की ओर ले गया होता। प्रकृति की वस्तुएँ उन्हें उसका स्मरण दिलातीं, और वे उसकी शक्ति और उसके प्रेम की गवाही देतीं। चौथी आज्ञा का सब्त जीवित परमेश्वर की मुहर है। यह परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में इंगित करता है, और यह उन प्राणियों पर, जिन्हें उसने बनाया है, उसके वैध अधिकार का चिह्न है।

तो फिर, यदि वह झूठा सब्त, जिसे संसार ने सच्चे सब्त के स्थान पर स्वीकार कर लिया है, पशु का चिह्न नहीं है, तो पशु का चिह्न क्या है?

यह भविष्यसूचक घोषणा कि पापाई सत्ता अपने को उस सब से, जो परमेश्वर कहलाता है या जिसकी पूजा की जाती है, ऊपर उठाएगी, सप्ताह के सातवें दिन के सब्त को बदलकर सप्ताह के पहले दिन कर देने में अत्यंत स्पष्ट रूप से पूरी हुई है। जहां कहीं परमेश्वर के सब्त की अपेक्षा पापाई सब्त का आदर किया जाता है, वहां अधर्म के मनुष्य को आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता से ऊपर ऊंचा ठहराया जाता है।

जो यह दावा करते हैं कि मसीह ने सब्त को बदल दिया, वे सीधे तौर पर उनके अपने वचनों का खंडन करते हैं। पर्वत पर दिए गए अपने उपदेश में उन्होंने घोषित किया: 'यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को नष्ट करने आया हूँ; नष्ट करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिंदु भी किसी रीति से नहीं टलेगा, जब तक सब बातें पूरी न हो लें। इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से एक को तोड़ेगा और लोगों को भी ऐसा ही सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन्हें करे और सिखाए, वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहलाएगा।'

रोमन कैथोलिक यह स्वीकार करते हैं कि सब्त में जो परिवर्तन हुआ, वह उनकी कलीसिया द्वारा किया गया, और इसी परिवर्तन को वे इस कलीसिया के सर्वोच्च अधिकार का प्रमाण बताते हैं। वे घोषित करते हैं कि सप्ताह के पहले दिन को सब्त मानकर, प्रोटेस्टेंट दैवीय विषयों में विधान करने की उसकी शक्ति को मान्यता दे रहे हैं। रोमन कलीसिया ने अपनी अचूकता के दावे को नहीं छोड़ा है, और जब संसार तथा प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ उसके द्वारा

रचे गए कृत्रिम सब्त को स्वीकार करती हैं, तो वे व्यवहारतः उसके दावे को मान लेते हैं। वे इस परिवर्तन के बचाव में प्रेरितों और कलीसिया-पिताओं के अधिकार का हवाला दे सकते हैं, पर उनके तर्क की भ्रांति आसानी से समझी जा सकती है। पोपवादी इतना चतुर है कि वह देख लेता है कि प्रोटेस्टेंट अपने आप को धोखा दे रहे हैं, मामले के तथ्यों पर स्वेच्छा से आँखें मूँद रहे हैं। जैसे-जैसे रविवार की व्यवस्था को बढ़ती स्वीकृति मिलती है, वह हर्षित होता है, यह आश्चस्त होकर कि अंततः यह पूरे प्रोटेस्टेंट जगत को रोम के ध्वज के अधीन ले आएगी। साइन्स ऑफ़ द टाइम्स, 1 नवंबर, 1899.